गढ़वाली लोकगीत

डॉ मंजु तॅवर

हमारे प्राचीनतम साहित्य पौराणिक आख्यानों में देवी–देवताओं की पवित्र–स्थली के रूप में हिमालयी भारतीय लाहमारे प्राचीनतम साहित्य पौराणिक आख्यानों में देवी–देवताओं की पवित्र–स्थली के रूप में हिमालयी भारतीय लोकमानस में शुद्धतम स्थल रहा है इसलिए इसे आज भी देवभूमि कहा जाता है। `कमानस में शुद्धतम स्थल रहा है इसलिए इसे आज भी देवभूमि कहा जाता है।कुमाऊॅनी में अनेकों गीत भी प्रचलित है। भारतीय लोक में जैसे कबूतर को पत्र वाहक और काले कौआ के बोलने को आगन्तुक के आने की पूर्व सूचना के संकेत के रूप में देखा जाता था, घुघुति उत्तराखण्ड का एक पक्षी है, जिस पर कुमाऊॅनी में अनेकों गीत भी प्रचलित है। घुघुति के ये गीत इसी प्रकार प्रेम व अन्य संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जाने जाते हैं।गढवाली और कुमाऊंनी दोनों बोलियों में स् के स्थान पर अधिकांशत्ः श् उच्चारिता किया जाता है। वैसे ये दोनों बोलियां एक ही माता पिता की सन्तान दो सगी बहनों जैसी है।